BAA–237

B.A. (IInd Semester) Examination, June 2024

HINDI LITERATURE–II

Paper - HIN 4.5 DCC 22 B

(हिन्दी साहित्य का रीति काव्य)

Time : 3 Hours] [*Maximum Marks : 60*

डूंगर कॉलेज (पी.जी.) कॉलेज, बीकानेर

खण्ड–अ **(अंक : 2 × 10 = 20)**

नोट :– सभी **दस** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **50** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

खण्ड–ब (i) **(अंक : 5 × 2 = 10)**

नोट :– सभी **दो** व्याख्यात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का चयन कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **5** अंक का है।

खण्ड–ब (ii) **(अंक : 5 × 2 = 10)**

सभी **दो** छोटे आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न में विकल्प का चयन कीजिए (उत्तर-सीमा **200** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **5** अंक का है।

खण्ड–स **(अंक : 10 × 2 = 20)**

नोट :– चार आलोचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रश्नों में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए (उत्तर-सीमा **500** शब्द)। प्रत्येक प्रश्न **10** अंक का है।

खण्ड–अ

1. (i) माधुर्य गुण की परिभाषा दीजिए।

(ii) व्यंजना शब्द शक्ति को समझाइए।

(iii) अनुभाव क्या है ? बताइए।

(iv) यमक अलंकार को स्पष्ट कीजिए।

(v) रीतिमुक्त को परिभाषित कीजिए।

(vi) बिहारी सतसई की विशेषताएँ बताइए।

(vii) भूषण के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

(viii) कहत, नटत, रीझत, खीझत, मिलत, खिलत, लजियात ..... में कवि क्या कहना चाहता है ?

(ix) घनानंद के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

(x) गिरधर कविराय की कुंडलियों की विशेषताएँ बताइए।

खण्ड–ब (i)

2. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकासु इहिं काल।

अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

स्वारथु, सुकृत न श्रम वृथा, देखि, विहंग विचारि।

बाज पराये पानि परि, तू पंछीनु न मारि॥

अथवा

वेद राखे विदित, पुरान राखे सार युत,

राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिंदुन की चोटी, रोटी, राखी है सिपाहिन की,

काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में॥

मीड़ि राखे मुगल, मरोरि राखे पातसाह,

बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।

राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज,

देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में॥

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

जहाँ साँचे चलें तजि आपुनपौ, झझकै कपटी जे निसाँक नहीं।

घनआनद प्यारे सुजान सुनौं, इत एक ते दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

अथवा

गुण के ग्राहक सहस नर, बिन गुण लहै न कोय।

जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

शब्द सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।

दोंऊ का इक रंग काग सब भये अपावन॥

कह गिरिधर कविराय सुनौ हो ठाकुर मन के।

बिन गुण लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥

खण्ड–ब (ii)

4. रस के अवयवों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अलंकारों के महत्व पर विचार प्रकट कीजिए।

5. रीतिकाल के नामकरण पर विचार प्रकट कीजिए।

अथवा

रीतिमुक्त कवियों पर टिप्पणी लिखिए।

खण्ड–स

6. रीतिकालीन काव्य की प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

7. "बिहारी के काव्य में श्रृंगार भक्ति और नीति की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

8. भूषण के काव्य में राष्ट्रीय चेतना को उद्घाटित कीजिए।

9. घनानंद के काव्य में वर्णित प्रेम व्यंजना को स्पष्ट कीजिए।